कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
भू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी.ए. स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
पार्ट II

(1) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय :—

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय जन्म (1911) प्रयोगवादी धारा के प्रवर्तक है। अज्ञेय कहानीकार, उपन्यासकार, कविता-लेखक एवं निबंधकार तथा आलोचक आदि के रूप में हिन्दी साहित्य में प्रकट हुए। जैसा इनका जीवन वैविध्यपूर्ण है वैसा ही इनका साहित्य या। कविता के क्षेत्र में भी इनके अनेक कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके है — भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम् हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्र धनु रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय आगन के पार द्वार तथा सुनहरे शैवाल। स्वः अज्ञेय जी ने कविता संबंधी निजी मन्तव्यों को तारसप्तकों की भूमिका ओं, अपने अनेक कविता संग्रहों के आमुखों तथा त्रिशंकु नामक कृति में अभिव्यक्त किया है। कला के विषय में वे अपने विचार प्रकट करते हुए लिखते है। "कला सामाजिक अनुपयोगिता की अनुभूति के विरुद्ध अपने को प्रभावित करने का प्रयत्न अपर्याप्तता के विरुद्ध है। हमारे कल्पित कमजोर प्राणी में हमारे कल्पित समाज के जीवन में भाग लेना। कठिन पाकर अपनी अनुपयोगिता की अनुभूति

Scanned with CamScanner

(2) से आहत होकर अपने विद्रोह द्वारा उस जीवन का क्षेत्र विस्तृत कर दिया है - उसे एक नई उपयोगिता सिखाई है सौन्दर्य बोध काव्य-सृजन के सर्वस्वीकृत सिद्धान्त स्वान्त-सुखाई के बारे में वे लिखते है - मैं स्वान्त सुखाई नहीं लिखता, अन्य मानवों की भाँति अहं मुझ मे भी मुखर है और आत्मभिव्यक्ति का महत्व मेरे लिए भी किसी से कम नहीं है। अज्ञेय के अनुसार — आधुनिक व्यक्ति यौन - वर्जनाओं के पुंज के सिवा कुछ नहीं है आज के मानव यौन - परिकल्पनाओं से लदा हुआ है और कल्पनायें सब दमित और कुंठित है कला की नैतिकता के बारे में उनके विचार दृष्टव्य है - कला संपूर्णता की ओर जाने का प्रयास है व्यक्ति को अपने को सिद्ध करने प्रमाणित करने की चेष्टा है प्रतिभाशाली कवि के कर्त्तव्य कर्मो का निर्देश करते हुए वे लिखते है - जो प्रतिभावना है जीनियस है वह इस परिस्थिति मे पड़कर एक हड़कम्प पैदा कर देगा और निर्मम होकर अपना मार्ग निकालेगा लेकिन जो जिनियस से कुछ भी कम है उसके लिए ऐसी परिस्थीति का परिणाम केवल इतना ही होगा कि समाज द्वारा जो

③ स्वीकृति पाने की जो मौलिक आकांक्षा है व्यक्ति की ~~वैयक्तिकता~~ वैयक्तिकता की जो पहली मांग है वह किस जायेगी की जो हो जायेगी। अज्ञेय जी के उपर्युक्त अभिव्यक्त विचारों के आधार पर काव्य के विषय में प्रकट किये गये विचारों का निष्कर्ष इस प्रकार निकाल सकते है — (क) कला केवल एक हड़कंप है ~~(ख) ...~~

(ख) तथाकथित प्रतिभाशाली कलाकारों का धर्म बलात् अपने आप में अपको थोपना है वह मान न मान मैं तेरा मेहमान (ग) अज्ञेय जी की आत्माभिव्यक्ति आत्मदान नहीं बल्कि जोरदार आत्मस्थापन एवं आत्मविज्ञापन है (घ) आधुनिक वात्स्यायन अज्ञेय जी की दृष्टि में व्यक्ति मात्र काम-कुंठाओं का पुंज है (ङ) सौन्दर्य-बोध मानव को उसके समुचे संदर्भों में न देखकर उसे केवल यौन-कुंठाओं के चक्रव्यूह में आबद्ध देखना है।

उदाहरणार्थ — गर्दभराज का चित्र —

मूत्र सिंचित मृत्तिका के वृत्त में
तीन टांगों पर खड़ा नतग्रीव
धैर्य धन गदहा।

~~बा~~ लज्जा भूषण नारी का चित्र —

तोड़ दूंगा मैं तुम्हारा आज का अभिमान
तुम हँसी, कह दो कि अब उत्संगवर्जित है।

(4) छोड़ दूं कैसे भला मैं जो अभीप्सित है
कोपवत् सिमटी रहे यह चाहती नारी
खोल देते लूटने का पुरुष अधिकारी।

यौन कुंठाओं का एक चित्र :-
'बावरा अहेरी' —
फूल को प्यार करो पर झरे तो झर जाने दो,
जीवन का रस लो देह-मन आत्मा की
रचना से
पर जो मरे उसे मर जाने दो

क्षणकंपी प्रतिभावना कवि का एक चित्र! —

'इन्द्र धनु रौंदे हुए ये', —

यूं मैं कवि हूं आधुनिक हूं नया हूं,
काव्य तत्व की खोज में कहां नहीं गया हूं
चाहता हूं आप मुझे।
एक एक शब्द पर सराहते हुए पढ़ें,
पर प्रतिमा पर सराहते हुए पढ़े
जैसी आप की रुचि आप स्वयं पढ़ें,